मेरी बांह पकड़ लो एक वार, हरि एक वार प्रभु एक वार ॥

मेरी बांह पकड़ लो एक वार,
हरि एक वार प्रभु एक वार ॥

यह जग्ग अति गहरा सागर है,
सिर धरी पाप की गागर है ॥
कुछ हल्का करदो इसका भार,
हरि एक वार प्रभु एक वार

एक जाल विछा मोह माया का,
एक धोखा कंचन काया का ॥
मेरा करदो मुक्त विचार,
हरि एक वार प्रभु एक वार

है कठिन डगर मुश्किल चलना,
बलहीन को बल दे दो अपना ॥
कर जाऊं भव मैं पार पार,
हरि एक वार बस एक वार

मैं तो हार गया अपने बल से,
मेरे दोस्त बचाओ जग्ग छ्ल से ॥

सो वार नहीं बस एक वार ॥।,
हरि एक वार प्रभु एक वार

Source:
https://www.bharattemples.com/meri-bahaa-pakad-lo-ik-baar-hari-ik-baar-prabhu-ik-baar/

Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw